दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 9792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 22.08.2020

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

एकात्म मानववाद का दर्शन विश्व नागरिक बनाता है-रामाशीष

गोरखपुर 22 अगस्त। सन 1965 में दीनदयाल उपाध्याय जी के मन में एकात्म मानववाद का विचार उत्पन्न हुआ। इस विचार दर्शन की पृष्ठभूमि में दुनिया को बहुत भयानक परिणाम लाने वाले विश्व युद्धों, जिसने पूरी दुनिया को दो ध्रुवों के रूप में बांटने का कार्य किया, पूंजीवाद, मार्क्सवाद और सेमेटिक सम्प्रदायों का वैचारिक प्रभाव रहा है। दुनिया में पूंजीवाद व लोकतंत्र का आकर्षण बढ़ रहा था। सोवियत संघ 1920 से ही दुनिया में कम्युनिज्म को लेकर चल रहा था। रूस व चीन के नेताओं ने करोड़ों लोगों की हत्या करके पूंजीवाद को खत्म किया था। स्टेलिन की यह घोषणा थी कि सारी दुनिया को हम अपनी छत्रछाया में लाएंगे। भारत के अंदर भी कुछ बड़े दिग्गज नेता कम्यूनिज्म फैलाने के लिए लालायित थे। मार्क्स की विचारधारा थी कि यदि कम्युनिज्म आएगा तो गरीबी मिट जाएगी। सन 1957–62 में 29–30 कम्युनिस्ट संसद पहुंच गए थे। उस समय लोगों की वैचारिकी थी कि सारी सृष्टि मनुष्य के उपभोग के लिए है। ऐसी स्थिति में व्यक्तिवाद बढ़ जाने के कारण मार्क्स का विचार भारत में विद्वानों को प्रासंगिक लगने लगा। यह स्थिति योग्यतम की उत्तरजीविता के सिद्धान्त के आधार पर बनी। मार्क्स ने कहा कि शक्ति व सत्ता व्यक्ति के हाथ में नहीं होनी चाहिए बल्कि सत्ता समाज के हाथ में रहनी चाहिए। कम्युनिस्टों ने व्यक्तिवाद, परिवार को नकारा। इस देश के अंदर जो पारम्परिक व्यवस्था थी वह न तो पूंजीवाद से चलती और न ही समाजवाद से। ऐसी स्थिति में भारत में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसा व्यक्तित्व आया । उन्होंने कहा कि व्यक्ति ही विकसित होकर परिवार तदुपरांत समाज व राष्ट्र बनता है। हमारे यहां व्यक्ति से सृष्टि और वसुधैव कुटुंबकम की वैचारिकी व्याप्त रही है। उक्त विचार युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज की 125 वीं जयंती वर्ष एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष की पुण्य स्मृति पर दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय व्याख्यानमाला के तृतीय दिवस एकात्म मानव दर्शन की वैश्विक प्रासंगिकता विषय पर मुख्य वक्ता रामाशीष, क्षेत्रीय संगठन मंत्री, प्रज्ञा प्रवाह, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार एवं झारखंड क्षेत्र ने व्यक्त किया ।

विद्वान वक्ता ने कहा आज विश्व बाजार का अपना एक केवल लाभ का स्वभाव है। जबकि भारतवर्ष में हम शुभ लाभ की वैचारिकी को धारण किए हुए हैं। बाजार के अंदर एक ऐसी सोच थी की मूल तोल के बाद भी ऊपर से कुछ अतिरिक्त सामान इसलिए दे दिया जाता था ताकि कहीं कोई कमी न रह जाए। दीनदयाल जी ने कहा कि पूरी सृष्टि ईश्वर व ब्रह्म से आच्छादित है। हमारे यहां पुरुषार्थ रहा है उसके आधार पर ही व्यवस्था चलनी चाहिए। भारत ने धर्म पुरुषार्थ को खोजा। वास्तव में जिसको सभी लोग चाहें

वही पुरुषार्थ है मनुष्य के सुख का संबंध अर्थ के साथ जुड़ गया जबकि हमारे प्रत्येक कृत्य का एक अर्थ है। हमारे चिंतन में पश्चिमी देशों के चिंतन से कुछ विकृतियां भी आईं। मन का सुख पुरुषार्थ है। चीजों को जितना ही सुंदर बना कर हम प्रस्तुत करते हैं संपूर्ण चीजों को जो लालित्य प्रदान करते हैं वह श्रेयस्कर है। अर्थ और काम की साधना में यदि धर्म का अधिष्ठान ना हो तो उसे त्याग देना चाहिए और जिस धर्म के अंदर लोगों के अंदर क्रोध पैदा हो जाए तो उसे भी परिवर्तित कर देना चाहिए। ऋषियों ने कहा कि जिसे धारण किया जा सके वही धर्म है। मनसा वाचा कर्मणा हम समान कृत्य करें तो यही धर्म है। हमारे समाज में जिनका कृत्य धर्म के अनुसार है वही धार्मिक है धर्म का निवास बुद्धि में है यदि मन कुछ चाहे और बुद्धि कुछ चाहे तो यह एकात्मवाद नहीं है। वास्तव में आत्मा का सुख यह है कि एकात्म भाव से पूरी सृष्टि को देखें और सोचे कि हम एक दूसरे के परिपूरक हैं। हमारा देश ऐसी संस्कृति वाला देश है जहां पहली रोटी गाय को देते हैं यही एकात्म दृष्टि है। यह देश एकात्म मानव दर्शन को जीवन के अंदर उतारने वाला देश है। हमारे यहां संघर्ष नहीं सामंजस्य का तत्व है। समाज को कैसे एक प्रभाव से खड़ा कर दिया जाए इस पर विचार करना चाहिए। शरीर धर्म का साधन है ,श्रम का साधन है सिंगार का नहीं। इस देश के अर्थशास्त्री ऋषि रहें है। जो अपने साथ–साथ दूसरों के भूख की भी चिंता करते थे। यदि पुरुषार्थ के अंदर सामंजस्य हो तभी एकात्म आएगा। एकात्म मानव दर्शन पूरी दुनिया के लिए सक्षम है।

इस संगोष्ठी में संयोजक डॉ.राजशरण शाही, महाविद्यालय के अनेक शिक्षक, कर्मचारी और छात्र उपस्थित रहे साथ ही गोरखपुर के बाहर के विद्वानों की सहभागिता भी रही। संगोष्ठी का संचालन डॉ. अमरनाथ तिवारी, डॉ.सुभाष चन्द्र ने किया। प्रस्तावना और परिचय डॉ.नित्यानन्द श्रीवास्तव ने किया। आभार ज्ञापन डॉ.गीता सिंह ने किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी,
सूचना एवं जनसम्पर्क